संसद भवन के दौरे पर आने वाले राष्ट्रीय रक्षा महाविद्यालय, नई दिल्ली के पाठ्यक्रम के सदस्यों के साथ बैठक के दौरान माननीय अध्यक्ष का सम्बोधन

लोक सभा के महासचिव, श्री उत्पल कुमार सिंह जी;
लेफ्टिनेंट जनरल, एस.एस. दहिया जी; सेवा मेडल, विशिष्ट सेवा मेडल, कमांडेंट, राष्ट्रीय रक्षा महाविद्यालय (एनडीसी);
रक्षा बलों और सिविल सेवाओं के गणमान्य वरिष्ठ अधिकारीगण;
हमारे मित्र देशों से आए अधिकारीगण; तथा
देवियो और सज्जनो:

———————

मुझे रक्षा बलों अर्थात भारतीय थल सेना, वायु सेना, नौसेना, और भारतीय सिविल सेवा जैसी विशिष्ट सेवाओं में कार्यरत और हमारे मित्र देशों से आए कर्तव्यनिष्ठ अधिकारियों से मिलकर बहुत खुशी हो रही है।

मैं लोकतंत्र के इस मंदिर में आप सभी का स्वागत करता हूं। मुझे विश्वास है कि संसद का दौरा करके आपको हमारी शासन प्रणाली के विभिन्न पहलुओं और लोकतांत्रिक शासन प्रणाली में संसद की महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में जानने का अवसर मिलेगा।

जैसा कि मुझे बताया गया है कि संसद का आपका यह दौरा राष्ट्रीय रक्षा महाविद्यालय (एनडीसी) द्वारा प्रस्तावित पाठ्यक्रम का एक भाग है। मैं *नेशनल सेक्योरिटी एंड स्ट्रेटिजिक स्टडीज़* विषय पर आधारित इस विशेष और व्यापक क्षमता निर्माण पाठ्यक्रम में भाग लेने के लिए आप सभी को बधाई देता हूं।

मुझे विश्वास है कि 47 सप्ताह तक चलने वाले इस कार्यक्रम के माध्यम से आपको राष्ट्रीय सुरक्षा और सामरिक मुद्दों से जुड़े विभिन्न पहलुओं को भली भाँति जानने और समझने का अवसर मिलेगा।

इस पाठ्यक्रम के तहत सुरक्षा और सामरिक महत्व के राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सरोकारों को शामिल किया गया है और मुझे पूरा विश्वास है कि ये अनुभव आपको भविष्य में कुशल नेतृत्व करने और महत्वपूर्ण दायित्वों का निर्वहन करने में मददगार होंगे।

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि राष्ट्रीय रक्षा महाविद्यालय की स्थापना वरिष्ठ सैन्य और सिविल अधिकारियों को प्रशिक्षण प्रदान करने और उनका क्षमता निर्माण करने के उद्देश्य से वर्ष 1960 में की गई थी। लोक सभा की प्राक्कलन समिति की सिफारिशों के आधार पर स्थापित एनडीसी राष्ट्रीय सुरक्षा और सामरिक नीति के अध्ययन हेतु एक प्रमुख संस्थान है।

इस संस्थान ने अनुसंधान और विश्लेषण, अंतर्राष्ट्रीय पहुंच, क्षमता-निर्माण, बौद्धिक विकास, रणनीतिक योजना, नेटवर्किंग, आदि पर ध्यान केंद्रित करके और ठोस प्रयासों के माध्यम से हमारी राष्ट्रीय सुरक्षा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

अब तक आयोजित 63 वार्षिक एनडीसी पाठ्यक्रमों से 70 से अधिक देशों के शिक्षार्थियों सहित हजारों अधिकारीगण लाभान्वित हुए हैं।

इससे राष्ट्रीय सुरक्षा संबंधी प्रशिक्षण और शिक्षण के क्षेत्र में एनडीसी की उपलब्धियों और अग्रणी प्रयासों का स्पष्ट रूप से पता चलता है।

इस संस्थान के लिए यह गर्व की बात है कि यहाँ से उत्तीर्ण होकर निकले शिक्षार्थियों ने सरकारी सेवा, सशस्त्र बलों और ऐसी अन्य एजेंसियों में वरिष्ठ पदों पर कार्यभार संभाला है।

यह हमारे लिए अत्यंत गर्व की बात है कि हमारे देश में युद्ध पद्धतियों और इनके अध्ययन का लंबा इतिहास रहा है जो इस बात का प्रमाण है कि हमारे पास सैन्य रणनीति की समृद्ध और स्थायी विरासत है।

यह महान चाणक्य की भूमि है। उन्होंने ही सबसे पहले सारे भारतीय उपमहाद्वीप को एकजुट किया था। उनके द्वारा दी गई युद्ध पद्धति और कूटनीति के सिद्धान्त, शत्रुओं की समझ, भविष्य की रणनीति, आदि आज भी राजनयिक संबंधों की पहचान बने हुए हैं।

राष्ट्रीय सुरक्षा हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता रही है और इसमें रक्षा क्षेत्र की प्रमुख भूमिका है। मुझे बताया गया है कि एनडीसी के इस कार्यक्रम के दौरान आपको विश्लेषणात्मक रवैया अपनाने, चुनौतियों के सभी पहलुओं पर विचार करने, नवाचार और प्रौद्योगिकी को अपनाने, संभावित और स्थायी समाधानों की पहचान करने और उन्हें प्रभावी ढंग से लागू करने के बारे में जानकारी दी जा रही है।

हम सभी जानते हैं कि भारत आज वैश्विक प्रगति, विकास, समृद्धि, शांति और स्थिरता में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। वैश्विक स्तर पर पहचान और भागीदारी के नाते जिम्मेदारियां भी बढ़ जाती हैं।

हम क्षेत्रीय या वैश्विक मुद्दों के प्रति उदासीन नहीं रह सकते हैं, इसलिए हमें रणनीतिक महत्व के ऐसे सभी मुद्दों के बारे में राष्ट्रीय हित को ध्यान में रखते हुए आकलन करना चाहिए।

इसके साथ ही, आज के समय में राष्ट्रीय सुरक्षा परिदृश्य भी जटिल होता जा रहा है। आज सीमापार आतंकवाद एक वैश्विक चुनौती बन गया है। किसी भी देश के पास, चाहे वह कितना भी बड़ा या शक्तिशाली क्यों न हो, ऐसे खतरों से पूरी तरह बचने के उपाय नहीं है।

इसके अलावा हमें साइबर वॉरफेयर, ड्रग्स, हथियार, मनी-लॉन्ड्रिंग आदि जैसी चुनौतियों का भी सामना करना पड़ रहा है। इस प्रकार की चुनौतियों से निपटने के लिए यह ज़रूरी हो गया है कि हम अपनी रक्षा क्षमताओं का आधुनिकीकरण करें और नवाचार के माध्यम से अपने सशस्त्र बलों को और सशक्त बनाएं।

सशक्त भारत की सशक्त सेना तैयार करने के लिए हमने पिछले कुछ वर्षों के दौरान अपने रक्षा क्षेत्र को आत्मनिर्भर बनाने और सुदृढ़ करने की दिशा में पहल करते हुए एक मजबूत नींव तैयार की है।

डिफेंस इंडस्ट्रियल कॉरिडोर के निर्माण से लेकर मैन्युफैक्चरिंग इकोसिस्टम के लिए आपूर्ति श्रृंखला तैयार करने तक, आयात पर निर्भरता कम करने से लेकर रक्षा निर्यात में वृद्धि करने तक, बजट आवंटन से लेकर 'मेक इन इंडिया' के माध्यम से स्वदेशी विनिर्माण को बढ़ावा देने तक, हम हर स्तर पर तेजी से आगे बढ़ रहे हैं।

इसी का परिणाम है कि हमारे रक्षा निर्यात में रिकॉर्ड वृद्धि हुई है और भारत अब 75 से अधिक देशों को रक्षा उपकरणों का निर्यात कर रहा है। यह दर्शाता है कि अब भारत का रक्षा उद्योग वैश्विक स्तर पर निवेश के लिए आकर्षण का केंद्र बनकर उभर रहा है।

रक्षा क्षेत्र में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) का उपयोग हो या नवाचार को बढ़ावा देने की बात हो, बदलते समय के साथ हमने नयी चीजों को आत्मसात भी किया है। इसी दिशा में आगे बढ़ते हुए *इनोवेशन फ़ॉर डिफेंस एक्सीलेंस (आईडेक्स)* योजना की शुरुआत की गई है।

इस योजना में उद्योग जगत सहित सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (एमएसएमई), स्टार्ट-अप्स, निजी अन्वेषकों, अनुसंधान एवं विकास (आर एंड डी) संस्थानों और शिक्षाविदों की भी भागीदारी है। इसके लिए रिकॉर्ड बजट आवंटन भी हुआ है।

यह हमारे रक्षा प्रणाली को मजबूत बनाएगा और ऐसे समय में, जब हम अमृत काल में प्रवेश कर रहे हैं, तो यह नए भारत के निर्माण की दिशा में एक सकारात्मक कदम सिद्ध होगा।

जब बदलाव की बात आती है, नई चीजों को आत्मसात करने की बात आती है, तो हमारे देश के युवा आगे बढ़कर नेतृत्व प्रदान कर रहे हैं।

आज हमारी बेटियां भी अब सशस्त्र बलों में शामिल हो रही हैं। यह देश की नारी शक्ति की ताकत और युवा की मेहनत को दर्शाता है।

हमारे सशस्त्र बलों में युवाओं की भागीदारी बढ़ाने और अधिक से अधिक ऊर्जावान युवाओं को शामिल करने के लिए नई योजना भी शुरू की गई है।

मैं समझता हूँ कि यह कदम युवाओं के लिए राष्ट्रीय विकास में भागीदारी करने के लिए एक सार्थक अवसर सिद्ध होगा और उनके रचनात्मक प्रयास देश को नई ऊंचाइयों पर ले जाएंगे।

हम सभी के लिए यह बहुत गर्व की बात है कि इस वर्ष भारत को जी-20 की अध्यक्षता करने का अवसर मिला है। यह न केवल भारत के वैश्विक स्तर पर एक प्रमुख शक्ति के रूप में उभरने का संकेत है, बल्कि दुनिया को यह दिखाने का अवसर भी है कि यह वह पवित्र भूमि है, जो 'वसुधैव कुटुम्बकम' अर्थात 'पूरा विश्व एक परिवार है' को मानती है और शांति के मार्ग पर बने रहते हुए प्रगति और समृद्धि में विश्वास करती है। आइए, हम अपने नए विचारों और प्रयासों को आगे बढ़ाएँ और सब साथ मिलकर इस दिशा में काम करें।

जैसा कि आप सभी जानते होंगे कि हम संसद में राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर नियमित रूप से चर्चा करते हैं। हमारी रक्षा सेवाओं को मजबूत बनाने और हमारे सैनिकों को बेहतर सुविधांए प्रदान करने के मुद्दे पर सभा में हमेशा सर्वसम्मति रही है।

रक्षा संबंधी हमारी संसदीय स्थायी समिति निर्वाचित प्रतिनिधियों एवं रक्षा बलों के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य करती है। एक संसदीय प्रहरी के रूप में समिति विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों, जैसे - रक्षा बलों की सामरिक, साइबर जोखिम और एंटी-ड्रोन क्षमताओं सहित हाइब्रिड वारफेयर की दृष्टि से सशस्त्र बलों की तैयारियों, महत्वपूर्ण शोध पहल, घरेलू स्तर पर रक्षा उपकरणों के उत्पादन का आकलन, सरकारी क्षेत्र के रक्षा उपक्रम (डीपीएसयू) का आधुनिकीकरण, आदि की समीक्षा करती है।

सशस्त्र बलों में अपनी सेवाएं देने वाले सैनिक इस राष्ट्र के गौरव हैं। आपका अथक परिश्रम और अद्वितीय योगदान हमें सुरक्षित रखता है। पूरा देश आपकी निःस्वार्थ सेवा और आपके बलिदान के महत्व को स्वीकार और सलाम करता है। हम गर्व के साथ उन क्षणों को याद करते हैं, जब हमारे सशस्त्र बलों ने भारत की शक्ति और दृढ़ता का प्रदर्शन किया और हमारी सीमाओं की रक्षा की।

आपका शौर्य, साहस और आपकी प्रतिबद्धता न सिर्फ देश और यहाँ के लोगों की रक्षा करती है बल्कि हम सभी के अंदर आत्मविश्वास का भी संचार करती है। इसके लिए हम आपका आभार व्यक्त करते हैं ।

इस विश्वास के साथ कि एनडीसी द्वारा प्रदान कराये जा रहे पाठ्यक्रमों के बहु-आयामी अवलोकन से आपका पेशेवर और व्यक्तिगत दृष्टिकोण व्यापक होगा और निश्चित ही आपको सामरिक नेतृत्व और नीति निर्माण के संबंध में गहन जानकारी मिलेगी।

मैं आप सभी के करियर और भावी प्रयासों की सफलता की कामना करता हूं । बहुत-बहुत धन्यवाद !

———